बोरोबुदूर मंदिर

बोरोबुदूर मंदिर स्थापत्य कला के क्षेत्र में विश्व में यह अद्वितीय है। यह केडु में बोरोबुदूर का मन्दिर एक पहाड़ी को काट कर बनाया गया है। जैसा ही नाम रहस्यमय है वैसा ही यह मंदिर भी है। पाल मुख में इसे 'गुप्त विहार' कहा है। इसकी खोज 1885 ई० में सर थामस रैफेलस ने की थी। एक समकोण चतुर्भुज मेढ़ी पर पाँच दीवारों से घिरी वीथियाँ क्रमशः चमक को ऊपर ले जाती हैं। ऊपर पहुँचने पर तीन गोल पंक्तियों में चबूतरे बने हैं। जिन पर 72 स्तूप हैं। सबसे ऊपर मध्य भाग में एक स्तूप है जिसकी मेढ़ी छिपी हुई है। यह स्तूप नवीं मंजिल पर बनाया गया है।

स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से यह किसी परिपाटी के अन्तर्गत नहीं बनाया गया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि वास्तव में यह स्तम्भ में ही नहीं बना। ऊपर के प्रमुख स्तूप की रक्षा के लिए ही नीचे तीन गोल चबूतरे और उनपर स्तूपों की पंक्तियाँ बनायी गयी हैं। सबसे नीचे दीवारों से घिरी वीथियों में 'ललितविस्तर' 'दिव्यावदान' आर्यशूर की 'जातकमाला' तथा 'गण्डव्यूह' से उद्धृत बुद्ध की जीवनी-घटनाओं पर उत्कीर्ण की गयी है जिसका विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है। चारों ~~कोने~~ दिशाओं के बीच में ऊपर चढ़ने के लिए सोपान है। बोरोबुदूर के स्तूप के विषय में विद्वानों में मतभेद है। सबसे ऊपर के भाग में स्तूप ही केन्द्र में है और अन्य तीन पंक्तियों में भी स्तूप हैं। किन्तु बनावट और आकार इनके केवल स्तूप होने में संदेह प्रकट करते हैं। स्टटरहाइम के मतानुसार इसकी नौ मंजिलें ध्यान की नौ अवस्थाएँ हैं। वास्तव में नीचे का भाग मन्दिर के आकार का है और ऊपरी भाग बौद्ध स्तूप है। यह भी कहा जाता है कि इस स्तूपों का निर्माण 'महापरिनिब्बान सुत और दिव्यावदान' के अनुसार ही हुआ। चौकोर मेढ़ी पर

Scanned with CamScanner

बर्मा के स्तूपों की भाँति यह मूल स्तूप से बना। बाद में भूचाल और अन्य किसी प्राकृतिक भय की आशंका से नीचे की पत्थर की दिवारों की पाँच वीथियाँ बनायी गयी हैं जिससे मूल स्तूप सुरक्षित रह सके और इन वीथियों में बुद्ध की धर्मचक्रप्रवर्तन अवस्था तक के जीवन-सम्बन्धी चित्र अंकित हैं। आलों में ध्यानी बुद्ध की मूर्तियाँ बैठायी गयी हैं। प्रत्येक वीथि के द्वार पर काल-मकर से अलंकृत किया गया है। ऊपर की तीन-जिनके नीचे की छः मंजिलों से पर्याप्त भिन्न हैं। ये खुली हुई हैं तथा इनमें किसी प्रकार की शिल्प कला का चित्रण नहीं किया गया है। गोल छतों पर तीनों पंक्तियों में क्रमशः 32, 24 और 16 स्तूप बने हैं। प्रत्येक स्तूप में ध्यानी बुद्ध की मूर्ति है, जो छलनीदार गुम्बद में है। मुख्य स्तूप सबसे ऊपर चोटी पर कमलाकार मंच पर है जो नीचे चौकोर है और ऊपर अष्टकोणाकार है। स्तूप की ऊँचाई 23 फुट है। बोरोबुदुर के निर्माण की तिथि लगभग 8वीं शताब्दी का अन्तिम भाग निर्धारित की जाती है। यहाँ का शिल्पकला विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

बोरोबुदुर का चित्र :→

बोरोबुदुर में फलकों तथा स्तम्भों के बीच में जातकों एवं 'ललितविस्तर' से उद्धृत कथाएँ चित्रित हैं। ये सब बुद्ध के जन्मकाल से धर्मचक्र-परिवर्तन तक का वृतान्त ही बतलाती हैं। ये चित्र इतने अधिक हैं कि यदि एक साथ लगा दिये जायें तो इनकी लम्बाई साढ़े तीन मील तक की हो जाती है।

बोरोबुदुर मंदिर में कलाकारों ने नाग, किन्नर, यक्ष, राक्षस, काल मकर, कल्पवृक्ष, पंजाति हंस, तथा अन्य पशु पंक्षियों का भी चित्र का चित्रण किया है। इनकी कला का स्रोत भारत ही था। पर स्थानीय कलाकारों ने अपनी बुद्धि और कुशलता का परिचय दिया है। कुछ विद्वानों

का विचार है कि बौद्ध-कला के प्रसार में बंगाल का बड़ा योगदान था, और माना भी जाता है कि शिल्पकार को उस क्षेत्र में सहायता मिली थी। पर कलाकारों ने भारतीय-नेपाली कला को आगे चलकर के नेपाली कला का रूप दे दिया। नेपाल की कला को दो भागों में बाँट भी सकता है एक में भारतीय प्रभाव ही सर्वश्रेष्ठ है, दूसरी में स्थानीय कला ने भारतीय विषय को अपने रंग में रंगा है। यह बात विशेषतया विचारणीय है कि नेपाली कला उस समय पूर्ण रूप से विकसित हुई। जब उत्तर-भारत में विदेशियों के आक्रमण और आगमन से राजनीतिक अशान्ति का वातावरण था। इन कलाकारों ने कलापूर्ण कृतियों से ही प्रेरणा ली क्योंकि भारत की ओर से मध्य युग में किसी प्रकार का योगदान मिलना कठिन हो गया। नेपाल में ब्राह्मण और बौद्ध कला स्पर्धी के रूप में नहीं वरन एक दूसरे के सहायक रूप में विकसित हुई और भावना ने आकृति की महानता से यहाँ की कला-कृतियाँ को सुरक्षित रखा।

Scanned with CamScanner